

फूलगोभी की वैज्ञानिक खेती: उन्नत उत्पादन एवं फसल प्रबंधन तकनीक*

*धीरज कुमार सरोज, डॉ. गुलाब चंद यादव, डॉ रवि शंकर वर्मा, दिनेश कुमार मीणा, रेहान अंजुम, राम लखन सोनी

सामान्य जानकारी: -

फूलगोभी (ब्रासिका ओलेरासिया वर. बोट्राइटिस) एक लोकप्रिय सब्जी है। वर्तमान में इसे सभी स्थानों पर उगाया जाता है। फूलगोभी, जिसे हम सब्जी के रूप में उपयोग करते हैं, के पुष्प छोटे तथा घने हो जाते हैं और एक कोमल ठोस रूप निर्मित करते हैं। फूल गोभी में प्रोटीन, कैल्शियम, फास्फोरस, विटामिन 'ए', 'सी' तथा निकोटीनिक एसिड जैसे पोषक तत्व होते हैं। गोभी को पकाकर खाया जाता है और अचार आदि भी तैयार किया जाता है। फूल गोभी की बुवाई करने वाले मुख्य राज्य उत्तर प्रदेश, बिहार, उड़ीसा, पश्चिमबंगाल, आसाम, हरियाणा और महाराष्ट्र हैं।

अग्रेती किस्में (Early Varieties)

- ☞ पूसा शुभ्रा
- ☞ पूसा हाइब्रिड 2
- ☞ माधुरी (कलर सीड्स)
- ☞ पंत गोभी 1

मध्यम किस्में (Mid-Season Varieties)

- ☞ पूसा कुंवारी
- ☞ काशी अगहनी
- ☞ पूसा कार्तिकी
- ☞ सुवासिनी (सिंजेंटा)
- ☞ गिरजा



किस्म: पूसा दीपाली' पूसा स्नोबॉल K-1' IARI, पूसा, नई दिल्ली में विकसित की गई है।

पछेती एवं पाले सहन करने वाली किस्में (Late & Snowball Varieties)

धीरज कुमार सरोज, डॉ. गुलाब चंद यादव, डॉ रवि शंकर वर्मा, दिनेश कुमार मीणा, रेहान अंजुम, राम लखन सोनी
उद्यानिकी (सब्जी विज्ञान) विभाग,
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, विद्या विहार, लखनऊ

पूसा स्नोबॉल हाइब्रिड-1

सुनहरी

स्नो पियर

प्रकार	बुवाई का समय	रोपाई का समय
अगेती (Early)	मई-जून	जून-जुलाई
मध्य (Mid-season)	जुलाई-अगस्त	अगस्त-सितंबर
पछेती (Late)	सितंबर-अक्टूबर	अक्टूबर-नवंबर

इसे मई के अंत से जून के शुरू तक बुवाई के लिए अनुशंसित किया जाता है। पिछेती किस्मों के लिए अगस्त से मध्य सितंबर और अक्टूबर से नवंबर का पहला सप्ताह रोपाई के लिए अच्छा समय है।
बुवाई दर

शुरुआती फसल की पौध पॉलिथीन या थैच हटाने वाले आवरणों के नीचे उठाई जाती है। 1 हेक्टेयर भूमि की आपूर्ति के लिए 100 वर्ग मीटर के क्षेत्र में 500 ग्राम बीज उठाए जाते हैं। बुवाई के समय नर्सरी मिट्टी को फराडोन 3 जी या 100 ग्राम थिमेट 10 जी से उपचारित किया जाता है। 25 दिनों की आयु के बीज प्रत्यारोपण किया जाना चाहिए।

बीज की मात्रा

500 g/ha बीज प्रति हेक्टेयर।

बीज उपचार

बीजों को क्रमशः थीरम (0.3% स्ट्रेप्टोसाइक्लिन (0.15%) @ 3 जी + 1.5 ग्राम / किग्रा बीज के साथ उपचारित करना चाहिए। बैक्टीरिया के सड़ने से बचने के लिए 10 मिनट के लिए 5200C पर गर्म पानी से बीज का उपचार करें।

बुवाई का ढंग

बुवाई के लिए डिबलिंग विधि और रोपण विधि का प्रयोग किया जाता है।

नर्सरी में बीजों को बोयें और आवश्यकतानुसार खादें और सिंचाई दें। बिजाई के 25-30 दिन बाद पौधे रोपाई के लिए तैयार हो जाते हैं। रोपाई के लिए 3-4 सप्ताह पुराने पौधों का प्रयोग करें।

जमीन की तैयारी और मिट्टी की सेहत

खाद एवं रासायनिक उर्वरक

बुवाई से पूर्व अंतिम जुताई के दौरान गोबर की खाद @ 25 t/ha मिट्टी में अच्छी तरह मिला देना चाहिए। रासायनिक उर्वरक एन पी के 120-60-60 किग्रा / हेक्टेयर की दर से, रोपाई के समय 24 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस और 12 किलोग्राम पोटाश के साथ बुवाई करें और रोपण के बाद 15 और 30 दिनों में दो बराबर विभाजन में 96 किलोग्राम नाइट्रोजन और 48 किलोग्राम पोटाश देना चाहिए।

कमी एवं आपूर्ति:

1. बोरान की कमी से दही में भूरी सड़न और लाल सड़न होती है और फूलगोभी के तने। रोपाई के दो सप्ताह बाद और दही बनने से 2 सप्ताह पहले पौधों को 1.55% एकाग्रता में बोरिक एसिड स्प्रे करें।

2. मोलिब्डेनम की कमी के कारण व्हिप टेल और अंधापन होता है। बेसल के रूप में 2 किलो सोडियम मोलिब्डेट / हा लागू करें। मोलिब्डेनम की कमी वाली फसल में, अमोनियम मोलिब्डेट @ 0.6 ग्राम / लीटर पानी के साथ पर्ण स्प्रे करें।

फसलों पर छिड़काव और उर्वरक के विवरण (Cauliflower गोभी)

फूलगोभी एक लोकप्रिय सब्जी है। वर्तमान में इसे सभी स्थानों पर उगाया जाता है। फूलगोभी, जिसे हम

सब्जी के रूप में उपयोग करते हैं, के पुष्प छोटे तथा घने हो जाते हैं कैल्शियम, फास्फोरस, विटामिन ए, सी तथा निकोटीनिक एसिड जैसे पोषक तत्व होते हैं। गोभी को पकाकर खाया जाता है और अचार आदि भी तैयार किया जाता है। उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, आसाम, हरियाणा और महाराष्ट्र हैं।

खरपतवार नियंत्रण

फूल गोभी की फसल में खरपतवार की रोकथाम के लिए पौध रोपण के बाद आवश्यकतानुसार 2 से 3 निराई गुड़ाई करनी चाहिए।

सिंचाई

बुवाई के बाद तुरंत पहली सिंचाई करें। मिट्टी, जलवायु, के आधार पर गर्मियों में 7-8 दिनों के अंतराल पर और सर्दियों में 10-15 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करें।

फसल कटाई और भंडारण (Harvesting & Storage)

फसल अवधि फूलगोभी की फसल बोने के 90-120 दिन बाद तैयार होती है।

कटाई समय

जब फल पूर्ण रूप से विकसित हो जाय तब काट लेना चाहिए। काटते समय यह ध्यान रखें कि फूल में खरोंच या रगड़ न लगने पाये। काटने के पश्चात् शीघ्र ही विक्रय का प्रबन्ध करना चाहिए। पौधे को तेज धार वाले चाकू, दरांती के साथ फूल गोभी के नीचे अच्छी तरह से काटा जाता है।

उपज दर

फूलगोभी की मध्यम और देर की किस्में फूलगोभी की शुरुआती किस्मों की तुलना में बेहतर उपज देती हैं। इसकी पैदावार लगभग 80-90 किंटल प्रति एकड़ है।

